महत्त्वपूर्ण नहीं है कि श्रीभगवान् का अंशस्वरूप जीव माया के संसर्ग में किस प्रकार से आया। एकमात्र श्रीभगवान् ही जानते हैं कि यह क्यों और कैसे घटित हुआ। शास्त्रों में श्रीभगवान् ने कहा है कि जो जीव इस प्रकृति के प्रति आकृष्ट हो रहे हैं, वे भवरोग की यातनायें भोगते हैं। इन श्लोकों से हम कम से कम इतना तो निश्चित रूप से जान ही लें कि सारे विकार और प्रभावसहित तीनों गुण प्रकृति (माया) से उत्पन्न होते हैं। जीवों के सब विकार देहजनित हैं, आत्मतत्त्व की दृष्टि से तो सभी जीव एक जैसे हैं।

कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते।।२१।।

कार्य=प्रभाव; **करण**=कारण के; **कर्तृत्वे**=उत्पन्न करने में; **हेतुः**=हेतु; **प्रकृतिः**=प्रकृति; **उच्यते**=कही जाती है; **पुरुषः**=जीव; **सुख**=सुख; **दुःखानाम्**=दुःखों को; **भोक्तृत्वे**=भोगने में; **हेतुः**=हेतु; **उच्यते**=कहा गया है।

अनुवाद

प्रकृति सम्पूर्ण प्राकृत कार्य-कारणों की हेतु कही गयी है और पुरुष (जीवात्मा) इस संसार में विविध सुख-दुःखों के भोगने में हेतु है।।२१।।

तात्पर्य

जीवों में विविध देहों और इन्द्रियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के कारण होती है। सभी ८४ लाख जीव-योनियाँ प्रकृति द्वारा रचित हैं। इन्द्रियसुख की नाना कामनाओं के अनुसार जीव को विभिन्न योनियों की प्राप्ति होती है। भिन्न-भिन्न योनियों में वह भिन्न-भिन्न सुख-दुःख को भोगता है। उसे मिलने वाले सुख-दुःखों का कारण उसका शरीर है, वह स्वयं नहीं। उसकी मूल अवस्था में आनन्द का अभाव नहीं है और वही उसका यथार्थ स्वरूप है। किन्तु माया पर प्रभुत्व की इच्छा के कारण वह इस प्राकृत-जगत् में पतित हो गया है। वैकुण्ठ-जगत् में ऐसा कुछ नहीं है। वह परम शुद्धस्वरूप है। वैकुण्ठ-जगत् शुद्धस्वरूप है, किन्तु प्राकृत-जगत् में प्रत्येक प्राणी नाना प्रकार के सुख देने वाले विषयों की प्राप्ति के लिए घोर संघर्ष कर रहा है। अधिक स्पष्ट रूप में, देह इन्द्रियों का कार्य है; इन्द्रियाँ इच्छा-पूर्ति की उपकरण हैं। इन दोनों का सृजन प्रकृति करती है तथा जैसा अगले श्लोक से स्पष्ट है, पूर्वजन्म के कर्मों और इच्छा के अनुसार ही जीव को अच्छी-बुरी योनि मिलती है। अतएव जीव को जो योनि मिलती है और उसमें जो आनुषंगिक सुख-दुःख भोगना पड़ता है, उसका कारण जीव स्वयं है। एक बार जिस देहरूपी घर में उसे डाल दिया जाता है, उसी के अनुसार वह प्रकृति के परवश हो जाता है, क्योंकि प्रकृति द्वारा निर्मित देह प्राकृतिक नियम के अनुसार ही क्रिया करती है। बद्धजीव में उस नियम को बदल देने की सामर्थ्य नहीं होती। जिसे कूकर-योनि की प्राप्ति हुई है, उसे कुत्ते के समान ही कार्य करना होगा, वह अन्यथा कुछ नहीं कर सकता। यदि उसको शूकर-योनि मिलती